गेहूँ
(WHEAT)

देश में गेहूँ के क्षेत्रफल एवं उत्पादन दोनों ही दृष्टि से उत्तर प्रदेश का प्रथम स्थान है, परन्तु उत्पादकता पंजाब व हरियाणा से कम है। प्रदेश में बुन्देलखण्ड के साथ ही पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोमती बेसिन क्षेत्र में गेहूँ की उत्पादकता पश्चिम उत्तर प्रदेश की तुलना में काफी कम है। इस क्षेत्र में धान–गेहूँ,मक्का/ज्वार–गेहूँ,तोरिया–गेहूँ, अगेतीअरहर–गेहूँ,गन्ना–गेहँ फसल–चक्र प्रमुख रूप से अपनाये जाते हैं।

उपरोक्त फसल–चक्रों को अपनाने से बोआई समय से न हो पाने के कारण एवं उचित फसल प्रबन्धन के अभाव में वर्तमान उत्पादकता एवं उत्पादन क्षमता में बड़ा अन्तर है, जिसे उपयुक्त प्रजातियाँ व सस्य प्रबन्धन अपनाकर कम किया जा सकता है।

प्रजातियाँ

- **समय से बोआई (नवम्बर) :** पी.बी. डब्ल्यू–343, पी.वी. डब्ल्यू–154, के–88, यू.पी.–2338, यू.पी.–2382, एच.यू.डब्ल्यू –468, पी.बी.डब्ल्यू– 443, पी.बी.डब्ल्यू. –17, पी.बी. डब्ल्यू– 542, पी.बी. डब्ल्यू– 502, पी.बी. डब्ल्यू.–550, के.– 9006, एच.डी. –2824, मालवीय– 234, एच.डी.– 2329 (जल भराव के प्रति सहनशील)
- **विलम्ब से बोआई (25 दिसम्बर तक) :** डी.वी. डब्ल्यू–14, मालवीय–234, एन.डब्ल्यू–1014, के.–9162, के.–7903 (हलना),के.–8020, यू.पी.– 2425, पी.वी. डब्ल्यू– 373, एन.डब्ल्य–ू 2036
  उच्च प्रोटीन वाली गेहूँ की प्रजाति पूसा गोल्ड (डब्ल्यू.आर. 544) की बोआई 15 जनवरी तक की जा सकती है।
- **सीमित सिंचाई :** पी.बी. डब्ल्यू.– 396, पी.बी. डब्ल्यू.–373, पी.बी. डब्ल्यू.–299, पी.बी. डब्ल्यू.–533, एच.डी.–2888
- **ऊसर क्षेत्र :** के.आर.एल. 1–4, लोक–1, राज–3077, राज–3765, के.आर.एल.–19, के.–8434, एन.डब्ल्यू –1067 एवं एच.डी.– 2285

बीज एवं बोआई

बोआई का समय	बीज दर (प्रति हेक्टेयर)	बीज शोधन	बोआई की दूरी
समय से बोआई (नवम्बर)	100 किलोग्राम य मोटा दाना 125 किलोग्राम	कैप्टान 2.0 ग्राम या थायरम 2.5 ग्राम। कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम/किलोग्राम बीज (कण्डुआ)	20-23 सेमी
देर से बोआई (30 दिसम्बर तक)	120-125 किलोग्राम		15-18 सेमी

उर्वरक प्रबन्धन

बोआई के समय (प्रति हे0)	85 किलोग्राम यूरिया	130 किलोग्राम डी.ए.पी.	67 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश
	अथवा		
	130 किलोग्राम यूरिया	375 किलोग्राम एस.एस.पी.	67 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश
प्रथम टाप ड्रेसिंग (प्रति हे0)	65 किलोग्राम यूरिया ताजमूल अवस्था पर (बोआई के 25 दिन बाद)		
द्वितीय टाप ड्रेसिंग (प्रति हे0)	65 किलोग्राम यूरिया कल्ले निकलते समय (बोआई के 45 दिन बाद)		

- ❖ खरीफ पड़ती या दलहनी फसल होने की दशा में संस्तुत उर्वरकों में प्रति हे0 20 किलोग्राम नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) कम कर दें।
- ❖ उसरीली भूमि में नाइट्रोजन की मात्रा सवा गुनी कर दें।
- ❖ असिंचित दशा में संस्तुत उर्वरकों की आधी मात्रा ही प्रयोग करें तथा बोआई के समय कूड़ों में 2-3 सेंमी गहराई में डालें।
- ❖ जिंक की कमी होने पर प्रति हेक्टेयर 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट बोआई के पूर्व अन्तिम जुताई के समय देना चाहिये। जिंक सल्फेट कभी भी फास्फोरस वाले उर्वरकों के साथ न मिलायें।

जल प्रबन्धन

गेहूँ में सिंचाई प्रजाति, बोआई का समय, भूमि की किस्म व जाड़ों की वर्षा पर निर्भर करती है। सामान्यतः गेहूँ में 5-6 सेंमी गहरी 6 सिंचाई निम्न अवस्थाओं पर करनी चाहिये।

Ø-l-	flpkbZ	ckvkbZ d ckn	ik/k dh voLFkk
1-	iFke flpkbZ	ckvkbZ d 20&25 fnu ckn	rktey voLFkk ¼fo'k"k ØkfUrd½
2-	nljh flpkbZ	ckvkbZ d 40&45 fnu ckn	dYy fudyr le;
3-	rhljh flpkbZ	ckvkbZ d 60&65 fnu ckn	xkB cur le;
4-	pkFkh flpkbZ	ckvkbZ d 80&85 fnu ckn	i"ikoLFkk ¼fo'k"k ØkfUrd½
5-	ikpoh flpkbZ	ckvkbZ d 100&105 fnu ckn	nX/kkoLFkk
6-	NBoh flpkbZ	ckvkbZ d 115&120 fnu ckn	nkuk Hkjr le;

सीमित सिंचाई की दशा में

गेहूँ में तीन सिंचाई उपलब्ध होने पर ताजमूल अवस्था, बाली निकलने के पूर्व व दुग्धावस्था पर, दो सिंचाई उपलब्ध होने पर पहली ताजमूल अवस्था व दूसरी पुष्पावस्था पर तथा एक ही सिंचाई उपलब्ध होने पर बोआई के 20–25 दिन बाद ताजमूल अवस्था पर करनी चाहिये। उसरीली भूमि में बोआई के 28 दिन बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिये। गेहूँ की फसल में पानी भरा रहना हानिकारक होता है। अतः जल–निकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना सिंचाई।

खरपतवार नियन्त्रण

गेहूँ की फसल में खरपतवारों का नियंत्रण न होने पर उपज में 10–40 प्रतिशत तक कमी होती है। खरपतवार का नियन्त्रण 2–3 बार निराई करके किया जा सकता है।

pkMh iRrh oky [kjirokj	2]4&Mh lkfM;e lkYV 80 ifr'kr 625 xke ek=k 400&600 yhVj ikuh	ckvkbZ d 30&35 fnu d vUnj ?kky dk fNMdko
ldjh iRrh oky [kjirokj@ xglk	vkblkikV;jku ,d fdykxke ek=k 600 yhVj ikuh vFkok DykfMukQki 60 xke ;k fQukDlkiki 90 xke 250&300 yhVj ikuh	
pkMh ,o ldjh iRrh oky	lYQklYQ;jku ¼yhMj½ 25 xke 250&300 yhVj ikuh	

क्लोडिनाफाप या फिनाक्साप्राप के साथ 2,4–डी नहीं मिलाना चाहिये, जबकि आइसोप्रोट्यूरान के साथ 2,4–डी मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है। यदि 2,4–डी का प्रयोग करना हो तो क्लोडिनाफाप या फिनाक्साप्राप के छिड़काव के एक सप्ताह बाद प्रयोग करें।

एकीकृत रोग–कीट प्रबन्धन

दीमक प्रबन्धन : गेहूँ में दीमक का प्रकोप होने पर कच्चे गोबर का प्रयोग न करें। बोआई से पूर्व बीज को 4–5 मिलीलीटर क्लोरपायरीफास प्रति किलोग्राम बीज दर में मिलाकर बोयें अथवा खड़ी फसल में प्रकोप होने पर क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. 2–3 लीटर मात्रा सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें।

एफिड/थ्रिप्स प्रबन्धन : एफिड / थ्रिप्स के रोकथाम हेतु प्रतिरोधी प्रजातियाँ जैसे यू.पी. 2121 व राज 3077 बोयें या मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. 750 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर दर से छिड़काव करें।

किट्ट रोग : किट्ट तीन प्रकार के होते हैं – पीला, भूरा एवं काला। सामान्यतः पीला किट्ट दिसम्बर में, भूरा किट्ट दिसम्बर–जनवरी में तथा काला किट्ट मार्च में उत्पन्न होता है।

प्रबन्धन : इसके लिये प्रतिरोधी प्रजातियों जैसे पी.वी.डब्ल्यू.–343, एन.डब्ल्यू.–1014; उर्वरकों की संतुलित मात्रा का प्रयोग ; समय से बोआई तथा जिनेब या डाईथेन एम 45 दवा 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।

झुलसा रोग : इस रोग में फसल झुलस जाती है।

प्रबन्धन : झुलसा नियन्त्रण के लिये कवकनाशी रसायन जैसे जिनेब 2.5 किलोग्राम/हेक्टेयर 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

अनावृत कण्डुआ : इस रोग में बालियों में दाने के स्थान पर काला चूर्ण भर जाता है जो हवा में फैलकर स्वस्थ पौधे के फूल पर गिरकर परागण के समय रोग फैला देता है। बीज ऊपर से देखने में स्वस्थ मालूम होता है। परन्तु रोग का कवक जाल बीज के अन्दर पाया जाता है, जो पौधों में बाली निकलने पर रोग के रुप में प्रकट होता है।

प्रबन्धन : इसके लिये प्रतिरोधी प्रजातियों जैसे

बी.एल. 421, पी.बी.डब्ल्यू.–343 का बोआई करें। बीज का धूप उपचार करें एवं कार्बेन्डाजिम से शोधित बीज बोयें। रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर जमीन में दबा या जला देना चाहिए। पौधों को उखाड़ते समय रोगी बालियों को लिफाफे से ढक लेना चाहिए, जिससे उनका चूर्ण दूसरे पौधों पर न गिरे।

करनाल वंट : इस रोग में गेहूँ के दाने की बाहरी खोल रह जाती है और दाने के स्थान पर काला चूर्ण भर जाता है। इसमें ट्राई मिथाइल एमीन की मछली जैसी दुर्गन्ध आती है।

प्रबन्धन : इसके नियन्त्रण के लिये प्रभावित खेत में 2 वर्ष गेहूँ न उगायें। प्रतिरोधी प्रजातियाँ जैसे पी.वी. डब्ल्यू–502 व राज–3765 की बोआई करें। सिंचाई अधिक न करें।

गेहूँ का सेहूँ रोग : यह रोग एक सूत्रकृमि (निमेटोड) द्वारा उत्पन्न होता है। इस रोग से ग्रस्त दाने गोल, कड़े, भूरे रंग के हो जाते हैं। ये दाने भिगाने पर फूलकर मुलायम हो जाते है तथा दबाने पर पतले धागे के आकार के सैकड़ों की संख्या में सूत्रकृमि निकलते है। ये मिट्टी में गिरने अथवा गेहूँ के साथ मिल जाने पर 10 वर्ष से अधिक समय तक जीवित रहते हैं।

प्रबन्धन : इसके नियन्त्रण हेतु 20 प्रतिशत नमक के घोल में छानकर प्रभावित दानों को निकाल दें तथा साफ दानों को तेज धूप में सुखायें। तत्पश्चात बोआई के लिए प्रयोग करें।

चूहा नियन्त्रण : चूहों के नियन्त्रण हेतु जिंक फास्फाइड से बने जहरीले चारे का प्रयोग करें।

xfrfof/k pkV

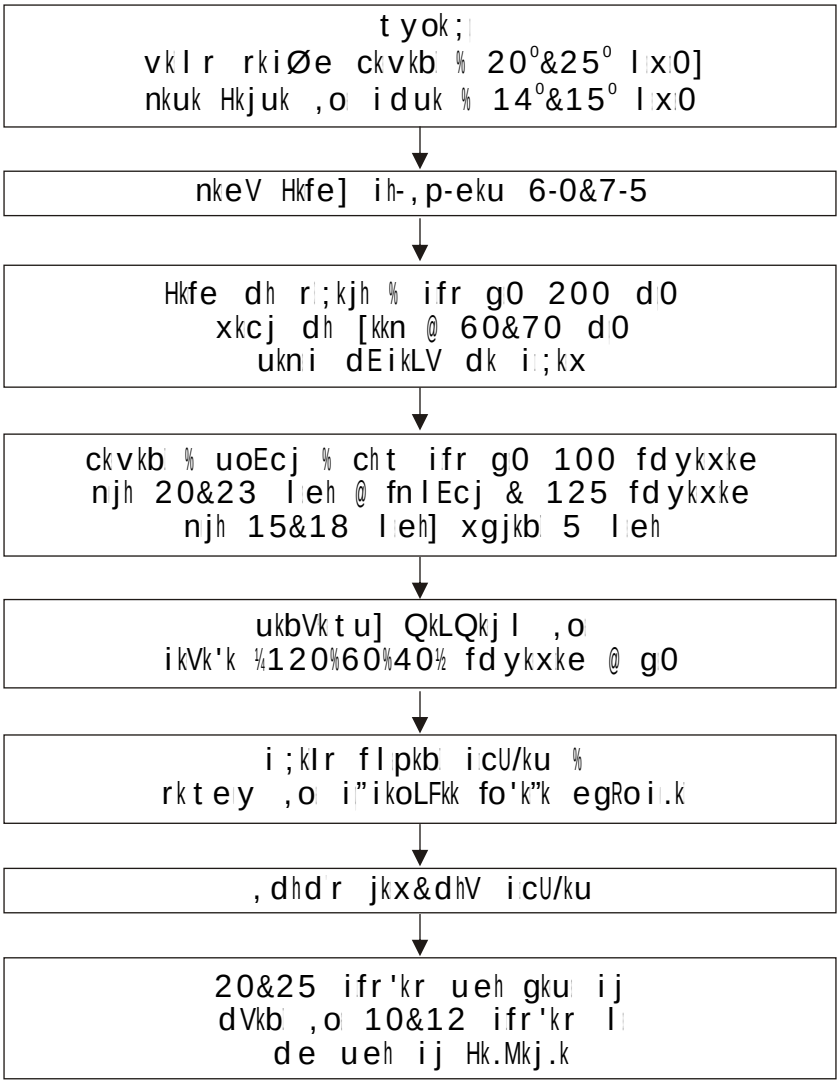

ifr gDVj ;j xgl dh [krh dk vk;&0;; ¼o"k 2009½

mRikn	mit ¼d0@g0½	fod; nj ¼:0@d0½	vk; ¼:0@g0½	lEi.k vk; ¼:0@g0½	mRiknu ykxr ¼:0@g0½	'k) vk; ¼:0@g0½	ykHk ykxr vuikr
nkuk	40	1080	43200	52]200	22]750	29]450	2-3%1
Hkl k	60	150	9000				